14

क्रूस पर लोग

मत्ती 27; मरकुस 15; लूका 23; यूहन्ना 19

"परन्तु यीशु के क्रूस के पास उस की माता और उस की माता की बहिन मगदलीनी खड़ी थी" (यूहन्ना 19:25)।

बाइबल का अध्ययन परमेश्वर के भय और ईमानदारी से करें। टुकड़े इकट्ठे करने और पूरी तस्वीर देखने की कोशिश करें तो यह आत्मिक घटना में मिलती है। गम्भीर बनें। अपने मनों से पहला कोई भी विचार निकाल दें। परमेश्वर को बताने दें कि आपको क्या विश्वास करने की आवश्यकता है। बाइबल से वह कहलवाने की कोशिश न करें, जो इसने कहा ही नहीं।

बाइबल पात्रों का फैसला हमारा अपना है। हम हर पात्र में अपने आप को देखते हैं। हम देखेंगे कि महान शिक्षाएं क्रूस के नजदीकी लोगों से ही मिलती हैं। ऐसे ही उन लोगों से भी शिक्षाएं मिलती हैं जो क्रूस के नजदीक नहीं थे। अपनी आंखें खुली रखें, जिन सवालों का जवाब नहीं दिया गया, वे इतने खतरनाक नहीं हैं, जितने वे सवाल, जिनका जवाब परमेश्वर पूछता है।

कई जो वहां उपस्थित नहीं थे

यहूदा। यहूदा क्रूस के पास नहीं था। उसकी कहानी मनुष्यों में सबसे अलग है। परमेश्वर का विचार करना न काम करने वाले की तरह नहीं है। यहूदा से अच्छा इसका कोई और उदाहरण नहीं हो सकता। उसका नाम ही हमें कंपकंपी लगा देता है और हमारा सिर नीचा कर देता है।

कइयों का सुझाव है कि परमेश्वर ने यहूदा को ठुकरा दिया, इसलिए उसने यीशु को पकड़वाया। यह तो परमेश्वर की बदनामी है। परमेश्वर लोगों का दुरुपयोग नहीं करता। इस कहानी की हाल ही की घटनाएं यहूदा को घमण्डी बताती हैं। उनका कहना है कि जो कुछ उसने किया, वह इसलिए किया क्योंकि उसके दिमाग में इसका कोई बड़ा कारण था, यह नहीं हो सकता! यीशु ने यहूदा को चुना और यहूदा ने यीशु को चुना और फिर उसे पकड़वा दिया।

यीशु ने यहूदा को अपने नज़दीक आने बल्कि चूमने तक की अनुमति दी (लूका 22:47, 48)। अपनी गिरफ्तारी के दौरान यीशु कह रहा था, "ऐसा न कर, भाग जा, यहूदा भाग जा!"

इससे हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि यहूदा एक सफल कपटी था। अगर अन्य ग्यारह को समझ आ जाती कि वह क्या करने वाला है तो उन्होंने उसे रोक देना था। वे चेहरे को देखकर उसके दिल की बात समझ न पाए। उन्हें समझ नहीं लगी थी। यीशु जानता था कि यहूदा ने शैतान को अपने मन में आने दिया

है, इसलिए उसने उसको ''विनाश का बेटा'' कहा (यूहन्ना 17:12)। यूहन्ना 12:4-6 कहता है कि भरोसेमंद खजांची यहूदा चोर था और प्रेरितों की पूंजी की थैली में से चोरी कर लेता था।

शैतान यहूदा में ''आया'' (लूका 22:3; यूहन्ना 13:27)। परमेश्वर के लिए बनाया गया मनुष्य अगर चाहे तो शैतान उसका इस्तेमाल कर सकता है। जब यहूदा अपना भयानक काम करने लगा तो यीशु ने उसे कहा, ''जो तुम करना चाहते हो, जल्दी करो'' (यूहन्ना 13:26-30)। शिष्य के रूप में वह अपने गुरु से बेवफाई कर रहा था। उसने केवल कुछ रुपयों के लिए यीशु को पकड़वा दिया।

बहुत कम लोग थे, जिनको यहूदा वाली बरकत मिली। वह तीन साल तक यीशु के साथ रहा। उसे विशेष सुविधाएं मिली थीं, पर वह उनका लाभ नहीं ले सका। दो टूक कहना हो तो वह यीशु की कृपा का लाभ नहीं ले सका। यहूदा ने घमण्ड से पछतावा किया पर उसने फ़जल या कृपा से मन नहीं फिराया।

यहूदा जितनी चेतावनी आज तक किसी को नहीं मिली थी। पकड़वाए जाने से कई महीने पहले यीशु ने कहा, ''क्या मैंने तुम बारहों को नहीं चुन लिया? तौभी तुम में से एक व्यक्ति शैतान है'' (यूहन्ना 6:70)। यहूदा को लगा होगा है कि उसे क्षमा मिल सकती है, लेकिन वह प्रेरित के रूप में किसी भी तरह बहाल नहीं हो सका। उसने अपने आप में सोचा होगा, ''इसके बाद मेरे भाई मुझे स्वीकार नहीं करेंगे।'' यहूदा को मौत से अधिक डर जिन्दगी से लगा। उसने इस मुश्किल का स्थाई हल निकालने के लिए आत्महत्या कर ली। अगर अपने नज़दीकी लोगों को यीशु नहीं बचा सका, तो हम भी नहीं बच सकते!

दूसरे प्रेरित। बारह में से ग्यारह प्रेरित क्रूस के नजदीक नज़र नहीं आते। यहूदा ने फांसी लगा ली थी और दस प्रेरित छिप गए थे। *पूरे रास्ते में* यूहन्ना ही था ...। पर क्रूस के नजदीक उसे कुछ भी कहते हुए नहीं बताया गया। यीशु बेहतर का हकदार था! क्या हम उसके साथ अच्छा करते?

यीशु के क्रूस पर जाने के समय बेशक प्रेरित छिप गए थे, पर फिर भी यीशु ने उनको क्षमा कर दिया और उनका इस्तेमाल किया। इससे हमारी उम्मीद बंधती है! प्रेरित केवल भागे नहीं थे (मत्ती 26:56; मरकुस 14:50; देखें जकर्याह 13:7)। विश्वास मानता है कि परमेश्वर को पता है कि वह क्या कर रहा है। क्या क्रूस प्रेरितों को अधिक दण्ड लगा? क्या दर्द संताप उन पर छा गया? बाइबल यीशु द्वारा सही गई तकलीफ़ पर बहुत ज़ोर नहीं देती। इसका ज़ोर लहू, हमारे उद्धार के लिए मौत और जी उठने पर है।

मरियम, मारथा और लाज़र। क्रूस पर, कब्र पर और ऊपर वाले कमरे में विशेषकर इन तीनों के होने का जिक्र आता है (उदाहरण के लिए देखें मत्ती 27:55, 56, 61; मरकुस 15:40, 47; लूका 23:49, 55; 24:10; यूहन्ना 19:25; प्रेरितों 1:13, 14)। प्रेरितों की पुस्तक या पत्रियों में उनका जिक्र नहीं है।[1] ये वे लोग थे, जिनके साथ यीशु ने अपने आखिरी दिन बिताए थे। वह उनसे प्रेम करता था (यूहन्ना 11:5)।

बहुत बार, जिन लोगों से आप प्रेम करते हैं और जिनके लिए आप बड़ी विनती करते हैं, उनको आप सबसे कम प्रभावित कर पाते हैं। क्या तीनों पहले ही बहुत दु:खी थे (यूहन्ना 11:1-44)? यह ध्यान दिया गया है कि लाज़र का जी उठना यीशु को क्रूस पर चढ़ाए जाने का बहाना बन गया। क्या उन्होंने सोचा कि वे क्रूस के पास खड़े होंगे तो उनके जीवन खतरे में पड़ जाएंगे? क्या उनका यीशु के साथ रुकना बहुत जोखिम भरा था।?

अन्य। क्या यीशु के सांसारिक भाई वहां थे? प्रेरितों 1 में ऊपर वाले कमरे में वे वहां थे, लेकिन क्रूस पर अपनी मां के साथ नहीं थे। यूहन्ना वहां रहा, जबकि वे भाग गए थे (यूहन्ना 19:25-27)।

क्या बरअब्बा वहां था? हम उसे आतंकवादी कहेंगे (मरकुस 15:7; लूका 23:18, 19)। पिलातुस हैरान था कि यहूदियों ने यीशु के बजाय बरअब्बा को छुड़ाना चुना था (मत्ती 27:15-23; मरकुस

15:6-14; लूका 23:17-23)। आपको क्या लगता है कि बरअब्बा ने क्या किया होगा?

उन लोगों के बारे में आपका क्या विचार है, जिनको यीशु ने चंगा/अच्छा किया था? वे वहां थे? क्या वे बहुत परेशान हुए या शर्मिंदा होकर वहां से चले गए?

कई जो वहां थे

शमौन कुरेनी/जब यीशु की मनुष्यता हार गई तो शमौन आ गया। यीशु की हिम्मत जवाब दे गई थी। वह क्रूस आगे नहीं ले जा सकता था, इसलिए जुलूस गुलगुता में रुक गया (मत्ती 27:32; मरकुस 15:21; लूका 23:26)।

आमतौर पर हम रुकावटों से बचने की कोशिश करते हैं। कई तकलीफदेह भी हो सकती हैं। हम अक्सर यह सोचते हैं कि ''इस रुकावट के बाद जिन्दगी फिर पटरी पर आ जाएगी।'' नहीं, नहीं, नहीं! जिन्दगी में रुकावटें ही तो हैं। सुसमाचार हमें मसीह के जीवन की कई-कई रुकावटों के बारे में बताता है। इस मौके पर शमौन की ज़िन्दगी में रुकावट आई थी।

शमौन को यीशु का क्रूस उठाकर ले चलने के लिए कहा गया था। इसमें परमेश्वर का प्रबंध दिखाई देता है। इस व्यक्ति ने अपनी जिन्दगी में सैकड़ों मील की धार्मिक यात्रा की थी। अचानक उसे एक कैदी को क्रूस ले जाने के लिए बेगार में लगाया गया।

मरकुस ने कोष्ठक में रखकर एक दिलचस्प टिप्पणी जोड़ी है। शमौन के बारे में उसने कहा कि वह सिकंदर और रूफुस का पिता था (मरकुस 15:21)। वह उस रूफुस का पिता हो सकता है, जिसका उल्लेख रोमियों 16:13 में पौलुस ने किया, पर पक्का नहीं कहा जा सकता।

शमौन को बिल्कुल पता नहीं था कि दो हज़ार वर्ष बाद भी लोग उसे जानेंगे। उसके विचार और उद्देश्य जो भी हों, लेकिन बाइबल में और इतिहास में उसका नाम हमेशा रहेगा। हम क्रूस उठाकर ले जाने के लिए उसका धन्यवाद करने के कर्जदार हैं जब यीशु आगे नहीं चल सका था। शमौन ने क्रूस का ऊपरी भाग उठाया था। धन्यवाद शमौन परमेश्वर उन्हें आशिषें देता है, जो उसके पुत्र की सहायता करते हैं।

स्त्रियां/हमदर्दी करने वाली, दु:खी स्त्रियां (लूका 23:27-31) यीशु के गुलगुता को जाने के समय छाती पीटती और विलाप करती थीं। यीशु ने उनको डरा देने वाला प्रकाश दिया। उन्होंने जल्द अपने लिए रोना था। यरूशलेम ने यीशु को क्रूस दे दिया, पर परमेश्वर ने रोमी सेनाओं द्वारा यरूशलेम का विनाश होने की अनुमति देनी थी (67-70ईस्वी)।

स्त्रियां वहां थीं। वे भागी नहीं। उन्होंने परवाह नहीं की। उसने गहरे जज़्बातों और भावना से उसकी ओर देखा। बाद में स्त्रियों ने यीशु को दफ़नाने में मदद की और उसकी कब्र पर पहरा देती रहीं (मत्ती 27:55-61; मरकुस 15:40-47; लूका 23:49-56)। परमेश्वर उन भली स्त्रियों को आशीष दे, जो यीशु से प्रेम करती थीं!

यीशु की माता मरियम शोक में डूबी उसके क्रूस के पास खड़ी थी। हम हैरान होते हैं कि वह वहां थी। कुछ भी हो जाने पर जब सब आपको छोड़ जाएं तो कौन आपके पास होगा? आपकी मां! परतस जैसे दोस्त भी इनकार करके तितर-बितर हो जाते हैं, पर अच्छी माताएं हमेशा वहां रहेंगी! यीशु अपने क्रूस को छोड़ नहीं सकता था। मरियम को पूरी समझ नहीं थी कि वह यह क्यों कर रही है, पर वह क्रूस के नजदीक रही।

हर यहूदी स्त्री मसीह की मां बनने की प्रार्थना करती थी। मरियम हैरान रह गई होगी कि परमेश्वर

ने उसे पुत्र को जन्म देने और उसका पालन पोषण करने के लिए चुना (लूका 1:26-38)। वह चुनौती से भी डर गई होगी। वह परमेश्वर का इकलौता पुत्र था। उसका पालन-पोषण करने के लिए उसको क्या करना पड़ा था? मरियम ने यीशु की माता होने की बड़ी कीमत अदा की। शमौन नबी ने कहा, "बरन तेरा प्राण भी तलवार से वार पार छिद जाएगा-इस से बहुत हृदयों के विचार प्रकट होंगे" (लूका 2:35)। कोई मां ही बता सकती है कि मरियम के साथ उस समय क्या बीती होगी। हमारे लिए चेला बनने की कीमत भी वही है। हमें भी कीमत अदा करने के लिए तैयार रहने की आवश्यकता है।

क्या हम दूर से ही यह समझ सकते हैं कि शहरपनाह (चारदीवारी) में यीशु के साथ क्या-क्या हुआ? उसकी मनुष्यता के बजाय उसके पमेश्वरत्व को समझना आसान है। मनुष्य के रूप में देखें तो हम मान सकते हैं कि यीशु एक विद्यार्थी है, एक उभरता हुआ एथलीट, जवान जिसके पक्ष में वोट थे कि वह "जीतेगा ही।" मरियम हैरान होगी कि "यह बच्चा कैसा आदमी बनेगा?" (देखें लूका 1:66)। उसके पालन-पोषण में उसका अनुभव कितना शानदार होगा!

यहां सबक क्या है? आत्मिक मामलों में, सांसारिक परिवार का महत्व नहीं होता। परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं लेता (प्रेरित 10:34)। यीशु के परिवार के लिए कोई धूमधाम नहीं मची थी। मरियम, यीशु के भाई और उसकी बहनों के लिए भी सुसमाचार की बात उतनी ही आवश्यक थी, जितनी अन्य लोगों के लिए! उनके लिए भी हम जैसे मसीह के शिष्य बनना आवश्यक था, और वे बने भी। वे सुसमाचार का संदेश पहली बार सुनाए जाने से पहले होने वाली प्रार्थनाओं में शामिल थे (प्रेरितों 1:13, 14)। ... पिता यूसुफ उस सब में वफ़ादार था, जो उसको करने के लिए कहा गया था। मरियम अपने पुत्र के प्रति वफ़ादार थी और बाद में उसकी कलीसिया के प्रति भी।

आज मरियम मनों से निकाली जाती है या खुदा की माता मानी जाती है। दोनों ही विचार गलत हैं। उसको कोई खुदाई पद नहीं मिला, पर आशीष खूब मिली (देखें लूका 11:27, 28)। उसका पुत्र उसका उद्धारकर्त्ता बना! (देखें प्रेरितों 1:14.) प्रेरितों की पुस्तक के बाद मरियम को वचन में स्थान नहीं मिलता।

अन्य स्त्रियां जो यीशु से प्रेम करती थीं, क्रूस के पास थीं। मरियम मगदलीनी वहां थी। अपने जी उठने के बाद यीशु पहले मरियम मगदलीनी को ही दिखाई दिया, जिसमें से उसने सात दुष्टात्माएं निकाली थीं (मरकुस 16:9; लूका 8:2)। एक तीसरी मरियम भी थी, जो याकूब और योसेस की माता थी (मरकुस 15:40)। याकूब और यूहन्ना की माता शलोमी भी योआना की तरह वहीं थी (लूका 24:10)। गलीली स्त्रियां (मत्ती 27:55; मरकुस 15:40, 41; लूका 23:49, 55) वहीं थीं और वे क्रूस के नजदीक ही खड़ी रहीं। क्रूस के पास आखिर तक रहने वाली और कब्र पर सबसे पहले जाने वाली स्त्रियां ही थीं। भली स्त्रियों के लिए परमेश्वर की महिमा करें!

क्रूस पर डाकू। लूका 23:39-43 पढ़ें। वह डाकू हमें आकर्षित करता है। ऐसी कोई बात नहीं है कि जिससे यह पता चले कि हम इस डाकू जैसा सोचते हैं। क्या हम विचार करने और समझदारी से ईमानदार होने को तैयार हैं?

डाकू बचाया गया था। यीशु पापियों के साथ पापियों *के लिए* मरा। पृथ्वी पर रहते हुए उसे पाप क्षमा करने का अधिकार था (मत्ती 9:4-6; मरकुस 2:8-11; लूका 5:22-24)। वह मर रहा था, पर मुर्दा नहीं था, इसलिए उसने इस आदमी को मुक्ति दी।

कुछ लोग शोर मचाते हैं, "वह बदमाश बहुत बुरा आदमी था, बहुत गिरा हुआ इंसान था, उसने ज़िन्दगी में कोई अच्छा काम नहीं किया और अब अन्तिम सांसों में परमेश्वर को याद कर रहा था।"

हमें चाहिए कि हम परमेश्वर को सलाह न दें कि वह लोगों को आशिषें कैसे दे! हमें बताने की आवश्यकता नहीं है कि यीशु किसे बचा सकता है! हम किसी पापी को ... कोशिश न करें? विचार करें: इस डाकू/बदमाश का सबसे बड़ा दिन उसको क्रूस दिए जाने का दिन था!हमें चाहिए कि हम परमेश्वर को सलाह न दें कि वह लोगों को आशिषें कैसे दे! हमें बताने की आवश्यकता नहीं है कि यीशु किसे बचा सकता है! हम किसी पापी को ... कोशिश न करें? विचार करें: इस डाकू/बदमाश का सबसे बड़ा दिन उसको क्रूस दिए जाने का दिन था!

आप कहते हैं, ''पर उसने कुछ नहीं किया था।'' हां, परन्तु उसने किया था! उसने उस क्षण पर दावा किया। उसने जो कुछ उससे बन पड़ा, किया। उसने यीशु के परमेश्वर होने का विश्वास किया। उसने पश्चाताप न करने वाले दूसरे डाकू को डांटा। क्रूस पर मसीह का बचाव करने वाला वही अकेला व्यक्ति था।

आप कहते हैं, ''वह बिना बपतिस्मे के बचाया गया।'' हो भी सकता है और नहीं भी! हालत से यह लगता है कि डाकू ने बपतिस्मा लिया हो *सकता* है। ''सारे यहूदी'' लोगों ने यूहन्ना से बपतिस्मा लेकर उसकी बात मानी थी (मत्ती 3:4-6; मरकुस 1:4, 5)। धार्मिक लोगों ने यूहन्ना और उसके बपतिस्मे को खारिज कर दिया था (लूका 7:29, 30)। कर वसूलने वाले और वेश्याओं ने यूहन्ना के बपतिस्मे को मान लिया था। यीशु और उसके चेले बाद में यूहन्ना से अधिक लोगों को बपतिस्मा दे रहे थे (यूहन्ना 4:1, 2)। उस डाकू ने जिसने हो सकता है कि बपतिस्मा न लिया हो, कहा अपनी ज़िन्दगी को दांव पर न लगाओ। किसी ऐसी मान्यता से, जिसका हल ... नहीं निकाला जा सकता, कोई निष्कर्ष न निकालो।

वह डाकू मूसा की व्यवस्था के अधीन मरा, पर हम मसीह की व्यवस्था में रहते हैं (गलातियों 6:2)। डाकू के मरने के वक्त, यीशु मुर्दों में से जी नहीं उठा था अर्थात उसने अभी अपना ग्रेट कमीशन नहीं दिया था (मत्ती 28:18-20; मरकुस 16:15, 16)। इस समय पवित्र आत्मा नहीं आया था, क्योंकि लोगों को मसीह बनने के लिए बपतिस्मा लेने का हुकुम नहीं दिया गया था। कलीसिया भी नहीं बनी थी। (यह सब पिन्तेकुस्त के दिन हुआ था; देखें प्रेरितों 2) आज उस डाकू की तरह कोई नहीं बचाया जा सकता!

बहुत ही शर्मिंदगी के साथ अपमानजनक कष्ट सहते हुए उस डाकू ने सबसे बेहतरीन विचार किया। उसने दूसरे डाकू को अपशब्द कहने पर डांटा। उसने दोनों की गलती मानी। उसने यीशु का पक्ष लिया। उसने ''राजभाषा'' का इस्तेमाल किया। किसी हद तक उसने जी उठने का संकेत भी दिया। डाकू और यीशु दोनों ही मर रहे थे। कोई बड़ा आश्चर्यकर्म या जी उठना ही उसे भविष्य की कोई उम्मीद बंधा सकता था। उसने दूसरे डाकू की तरह यीशु के साथ चालाकी करने की कोशिश नहीं की। अपनी लाचारी में उसने अपने आपको ''रहिम के दरबार'' के सामने झुका दिया। ''मौत के बिस्तर पर मुक्ति'' के अधिकार का कोई तरीका नहीं है। डाकू ने यीशु में अपने विश्वास का अंगीकार किया, जिससे जो नरक का हकदार था, वह स्वर्ग में चला गया। क्रूस ने डाकू को वैसे ही पुकारा जैसे वह आज हमें पुकारता है: ''जीवन व्यर्थ नहीं है ... असफलता भाग्य नहीं है ... मौत आखिर नहीं है!''

भीड़।... लोग क्रूस पर चढ़े हुए लोगों के पास से गुजरते हुए उनको ताने मारते थे (मत्ती 26:65-68; 27:47-49; मरकुस 14:65; 15:29-36)। क्रस से मनुष्य में अमानवीय विचार जाता था। दर्शकों के लिए यह एक बुरा, खूनी खेल का नज़ारा होता था। नये-नये प्रयोग किए जाते थे: ''नीचे उतर आ ...''; ''वहीं रह ...''; ''उसे कोई सस्ता सा सिरका दो ...''; ''हो सकता है एलिय्याह आ जाए!'' कितना

भयानक नज़ारा है! आज दुनिया में प्रदर्शन करने वालों की भरमार है। जब प्रदर्शनों की ज़रूरत थी तब ये लोग कहां थे? वे पुकार रहे थे, ''इसका लोहू हम पर और हमारी सन्तान पर हो'' (मत्ती 27:25)। उनको उस विश्वास के लिए कितनी खतरनाक कीमत चुकानी पड़ी!

शत्रु। घमण्ड से उन्होंने कहा, ''हमने उसको निपटा दिया!'' पर रविवार आया। वे अपने ही बनाए फंदे में फंस गए। जी उठने के बाद मसीहियत ने पूरी दुनिया में तूफ़ान मचा दिया। बाइबल में बताए गए यहूदी मत का खात्मा हो गया। 70 ईस्वी में यरूशलेम की घेराबंदी कर ली गई। यह सब कहने का क्या अर्थ/मतलब है? अर्थ केवल इतना है कि परमेश्वर के विरुद्ध लड़कर कभी कोई नहीं जीत सकता।

रोमी सिपाही। रोमी सिपाहियों ने यीशु को शाही वस्त्रों जैसी पोशाक पहनाई और फिर उसका मज़ाक उड़ाने लगे (मत्ती 20:17-19; 27:27-31; मरकुस 10:32-34; 15:16-20; लूका 18:31-34; 23:11; यूहन्ना 19:1-5)। यीशु को बहुत बेरहमी से मारा गया। सिपाहियों ने उसके वस्त्रों पर चिट्ठियां डाली थीं (मत्ती 27:35; मरकुस 15:24; यूहन्ना 19:23, 24)। इसने जख्मों पर नमक का काम किया। पर यह रोमी सूबेदार बहुत गौर से देख रहा था। उसने इस सबका वैसे ही निष्कर्ष निकाला जैसे हमें निकालना चाहिए, ''यह परमेश्वर का पुत्र था!'' (मत्ती 27:54; देखें मरकुस 15:39; लूका 23:47)।

अरिमतिया का यूसुफ और निकुदेमुस। अरिमतिया के यूसुफ और निकुदेमुस ने बड़ी हिम्मत से यीशु की लाश मांगी (मत्ती 27:57-61; मरकुस 15:42-47; लूका 23:50-56; यूहन्ना 19:38-42)। हम उनकी प्रशंसा करते हैं क्योंकि उन्होंने यीशु को दफ़नाया।

बहुत से लोग इसी तरह सोचते हैं, जैसे उन दोनों ने किया। बहुत से लोग परमेश्वर को सलाह देने के लिए ही उसकी सेवा करना चाहते हैं। इन दोनों ने, जितना वे कर सकते थे, असल में उससे बहुत कम किया! उन्होंने केवल एक मृत व्यक्ति की लाश पर दावा किया, जिस पर वह उसके जीवित रहते गुप्त रूप से विश्वास करते थे। यीशु हमें अपने जीवन देने के लिए कहता है, जबकि कई बार हम केवल उसकी देह पर इत्र ही लगाना चाहते हैं! हमें यह नहीं बताया गया कि यूसुफ और निकुदेमुस का क्या हुआ। उनके द्वारा किए जाने वाले काम के लिए साहस की आवश्यकता थी, पर यीशु को वह बनाने के लिए जो वह है, अर्थात प्रभु बनाने के लिए, उसका अंगीकार करने के लिए साहस की आवश्यकता है।

कई लोग ज़िन्दा उम्मीद के बजाय किसी खोए हुए काम के लिए बहुत मेहनत करेंगे। जीवित प्रभु का आज्ञा मानने के बजाय मुर्दे को दफ़नाना आसान है।

क्रूस ...
और मार्ग ही नहीं है!

टिप्पणी

[1]पत्रियां नये नियम की इक्कीस पुस्तकें हैं, जो मूलत: मसीही लोगों के नाम पत्रों के रूप में लिखी गईं। इनमें मसीही जीवन जीने की बहुमूल्य शिक्षाएं बताई गई हैं।